सं० स्रो०िव ०/यमुना/51-86/32918.—वृंकि हरियाणा के राज्यपाल की रामे है कि परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) हरियाणा राज्य परिवहन, यमुनानगर, के श्रमिक श्री नरेश शर्मी हैल्पर, सुपुत्र श्री लेख राज, मकान नं० 515, चान्द पुर, यमुनानगर तथा उसके प्रवन्ध हों के मध्य इस में इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक दिवाद है;

ग्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यनाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इक्नलिए, अब, आँद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं०-3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास भ देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री नरेश शर्मा हैल्पर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

ादेनांक चण्डीगढ़ 8 सितम्बर, 1986

संब्योविक हिसार/57/86/32925—चूंकि हरियाणा के राज्यभाल की राये है कि परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) हरियाणा राज्य परिवहन, सिरसा, के श्रमिक श्री लख्यन दास, सुपुत्र श्री किशन लाल मार्फत श्री हरदेव सिंह समाग, एडवोकेट, वरनाला रोड़, सिरसा तथा उसके प्रवन्धकों के वीच इस में इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिण्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलियें, अब, अोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना में 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक की विवादग्रत या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यानिर्णय एवं पंचाटतीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच यातो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:---

क्या श्री लख्मण दास की छंटनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो०वि०/पानी/77-86/32932--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० चरक फारमेंसी इण्डिया प्रा०लि०, जुरासी रोड़, जी.टी. रोड़, समालखा, के श्रमिक श्री संतवीर सिंह, सुपुत्र श्री भाग मल, गांव व डा० महावटी, समालखा, जिला करनाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इस है बाद लिखित मामले में कोई श्रीचीगिक विवाद है:

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यक्षाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं,

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुगे हरियाणा के राज्यक्षल इस के द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं03(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला की विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तील मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है;

क्या श्री सत्वीर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संव ग्रोव विव/ग्राईवडीव/शुष/14-86/32939---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैनेजिंग डायरेक्टर दी हरियाणा को-ग्रोबेटिव सब्लाई एण्ड मार्केटिंग फेडरेशन लिंब, चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री प्रणोतम लाल मार्फत श्री राजेश्वर, नाथ मवनं व 2655, टिम्बर मार्किट, ग्रम्बाला केन्ट तथा उसके प्रथम्बकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विधादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री प्रशोत्तम लाल की सेव श्री का समाधन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो यह विस राहत का हकदार है?